# हम पोट्री

आम तौर पर पोट्री का मतलब मटके बनाने से लिया जाता है। सामान्य जन की शब्द में कोई रूचि दिखाई नहीं देती है। आज कुम्हार और उसके द्वारा बनाये गये उत्पाद दोनों ही उपेक्षा के शिकार नजर आते हैं। आज मिट्टी का स्थान सीमेन्ट ने ले लिया है। रही सही कसर वाटर कूलर और फ्रिज ने पूरी कर दी है। जिसके साथ ही मिट्टी से जुड़ी सम्पूर्ण कला के नष्ट होने का संकट गहराता जा रहा है। हमारे देश में मिट्टी को हमेशा से ही एक सम्मानजनक दर्जा मिला है। महात्मा गांधी ने मिट्टी को एक औषधि का दर्जा दिया था। वे मिट्टी के साथ उम्र भर अनेक प्रयोग करते रहे। मिट्टी आज भी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। एक बालक जब मिट्टी में खेलता है तो कितना प्रसन्न नजर आता है। छोट–छोटे बच्चे रेत में घरौंदे बनाते वक्त अपनी ही दुनिया में खो जाते हैं। बच्चे ही क्यों बड़े भी जब अपना बड़प्पन भुलाकर मिट्टी का स्पर्श करते हैं तो वो जो आनन्द मिलता है जिसे बयां नहीं किया जा सकता। यह मिट्टी हमें बताती है कि रेत के बेजान कणों से मनमोहक महल, सुन्दर कलाकृतियाँ किस प्रकार जन्म लेती हैं। मिट्टी हमें संयम और धीरज के साथ कर्म करते जाना सीखाती है। जो कि



हमारी सच्ची खुशी और आत्म सन्तुष्टि के लिए नितांत आवश्यक नजर आता है। मिट्टी से एक सुन्दर कलाकृति बनने की लम्बी प्रक्रिया में सम्पूर्ण जीवन दर्शन छिपा है। किस प्रकार एक अच्छी मिट्टी की खोज की जाती है उसे घर लाकर बारीक किया जाता है। उसमें गोबर को पीसकर बनाई खाद मिलाई जाती है। उचित मात्रा में पानी डालकर हाथ पैरों से जब उसको मिलाया जाता है तो शरीर को ऐसा लगता है मानों मिट्टी ने उसका क्रोध, अशान्ति छिनकर शरीर को आनन्ददायक शान्ति और शीतलता से भर दिया हो। जब यही मिट्टी लोचदार रूप धारण करती है तब यह दुनिया का कोई भी नया रूप धारण करने के लिए तैयार होती है। इन्सान के हाथों का सन्तुलित स्पर्श पाकर जब मिट्टी आकार ग्रहण करने लगती है तो जो सफलता का एहसास इन्सान को गुदगुदाता वह एक तरफ उसे खुशी प्रदान करता है, वही एकाग्रचित होकर आगे बढ़ने के लिए तैयार भी करता है। एक अच्छा इन्सान बनने के लिए जितने प्रयास और गुणों की आवश्यकता होती है वो सब मिट्टी के साथ काम करते हुए अर्जित किये जा सकते है। मिट्टी को किसी फूलदान, सुराई, मूर्ती या अन्य कोई रचनात्मक रूप देने की प्रक्रिया में व्यक्ति को ना जाने कितनी ही असफलताओं,

निराशाओं और परेशानियों से गुजरना पड़ा होगा इस बात में ही उसके सभी गुण जन्म लेते हैं।

पोट्री एक कला है जो अपने अन्दर पूरा जीवनदर्शन लिए हुए है। उदय पाठशालाओं में पोट्री को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है तो इसका मतलब बच्चों को कुम्हार बनाना नहीं है और ना ही यह किसी रोजगार के मकसद से किया जाता है कि बच्चे आगे चलकर इससे अपना पेट भरेंगे। यदि कोई बच्चा ऐसा करता है तो यह तो अलग बात है। प्राथमिक स्तर पर यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। उदय पाठशालाओं में पोट्री एक कला है औ कला व्यक्ति को स्वयं के श्रम का उपयोग, संयम, अनुशासन और सौन्दर्य की समझ बनाने में मदद करती है। जो एक बेहतर इन्सान और श्रृजनशील सामाजिक प्राणी की अनिवार्य शर्त है। बच्चा अपने जीवन में अच्छा कलाकार या अच्छा पोटर ना भी बने पर वह एक अच्छा इन्सान बने ऐसी हमारी अपेक्षा है।



# हम पोट्री

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र